ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. No.- 121-125

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- I, Issues-27, YEAR- Jan.-March-2023

# नाथसम्प्रदाय और गुरु गोरखनाथ

डॉ0 यामिनी राय

एसो. प्रोफेसर– हिन्दी विभाग, श्यामेश्वर महाविद्यालय, सिकरीगंज– गोरखपुर (उ0प्र0) भारत

Received-22.01.2023, Revised-28.01.2023, Accepted-02.02.2023 E-mail: amod_kumarrai@yahoo.com

***सारांशः*** ***'नाथपन्थ' के प्रस्थानिक बीज–बिन्दु हैं 'शिव'। शिव अर्थात् शिवनाथ। शिवनाथ अर्थात् आदिनाथ शिव। शिव के डमरू–निनाद से बाह्यनाद अर्थात् नादब्रह्म की उत्पत्ति हुई। यही नादब्रह्म का शब्दकायिक रूपान्तरण है–'नाथपन्थ'। 'नाथ' एक ब्रह्मवाची उपाधि है, एक पुरापुरुषवाची विशेषण है। दीक्षित योगियों अथवा अवधूतों के नाम के अन्त में जुड़कर एक पूर्ण नाथपन्थी–अभिधान अर्जित करता है, जैसे आदिनाथ, शिवनाथ, मत्स्येन्द्रनाथ, गोरखनाथ, अवेद्यनाथ, आदित्यनाथ आदि। नाथसम्प्रदाय भारत का एक धार्मिक हिन्दू–पन्थ है। मध्ययुग में प्रादुर्भूत इस सम्प्रदाय में बौद्ध, शैव तथा योग की परम्पराओं का समन्वय दिखायी देता है। यह हठयोग की साधना–पद्धति पर आधारित पन्थ है। शिव इस सम्प्रदाय के प्रथम गुरु एवं आराध्य हैं। इसके अतिरिक्त इस सम्प्रदाय में अनेक गुरु एवं शिष्य हुए। नाथों की संख्या नौ मानी गयी है। लेकिन अलग–अलग ग्रन्थों में इनके क्रम अलग–अलग दिये गये हैं। प्रचलित क्रम इस प्रकार है– आदिनाथ, मत्स्येन्द्रनाथ, जालन्धरनाथ, गोरक्षनाथ, नागार्जुन, सहस्रार्जुन, दत्तात्रेय, देवदत्त, जड़भरत। जनश्रुति है कि आदिनाथ साक्षात् शिव हैं। मत्स्येन्द्रनाथ और जालन्धरनाथ उनके शिष्य थे। लौकिक रूप में मत्स्येन्द्रनाथ इस पन्थ के आदि प्रवर्तक हैं। कहा जाता है कि सिंघलद्वीप की रूपसियों में आसक्त हो जाने से मत्स्येन्द्रनाथ साधनाच्युत होकर कुएँ में पड़े थे, तब 'जाग मछन्दर गोरख आया' कहकर गोरखनाथ ने उन्हें उद्‌बोधन दिया था। अतः इस पन्थ के वास्तविक प्रवर्तक गोरखनाथ ही माने जाते हैं।***

***कुंजीभूत शब्द– नाथपन्थ, शिवत्व, नवनाथ, कदलीदेश, शैवसम्प्रदाय, साधनाच्युत, हठयोग, बेहुरा, मसीत, बीज–बिन्दु।***

नाथपन्थ या कि नाथसम्प्रदाय के उदय की एक प्रदीर्घ पृष्ठभूमि है। भारतीय दर्शनग्रन्थों, इतिहासग्रन्थों, साहित्यग्रन्थों के अनुशीलन–अन्वेषण से अब पूर्णतः प्रकाशित हो चुका है कि शिव (मंगल) की कामना से जुड़ा नाथसम्प्रदाय शिवत्व की प्रतिष्ठा का उद्‌वाहक है। आदिनाथ अर्थात् योगीश्वर शिव इस पन्थ के प्रस्थानिक प्रेरणास्रोत हैं। नवनाथों और नाथयोगियों में गुरु गोरखनाथ को नाथपन्थ के प्रवर्तन का श्रेय प्राप्त है।

नाथपन्थ के अध्येता और विश्लेषक अनुसन्धायक आज की तारीख में किसी सार्थक निष्कर्ष तक यात्रा कर चुके हैं। उनकी खोज केवल बौद्धिक विलास नहीं है, प्रामाणिक तथ्य से परिपुष्ट एक सबल साक्षात्कार है। इस प्रसंग में नाथपन्थ के एक अन्वेषक आचार्य के विश्लेषी दृष्टिकोण से साक्षात्कार लिया जा सकता है– "'नाथपन्थ' को 'नाथसम्प्रदाय' के नाम से भी जानते हैं। सम्प्रदाय अथवा पन्थ ज्ञानसाधना, अध्यात्मसाधना और परमतत्त्वबोध के धर्मपीठ होते हैं। मोक्षप्राप्ति के, ईश्वरीय साक्षात्कार के आनुष्ठानिक केन्द्र होते हैं। महाशक्ति–शिवशक्ति के आराधना–तीर्थ भी। विष्णुशक्ति को जोड़कर कालान्तर में नाथपन्थ ने अपनी अखण्ड व्याप्ति बना ली। शिव के अर्द्धनारिश्वर रूप को अंगीकार कर अपने पन्थ में स्त्री यानी योगिनियों को गौरव प्रदान की। पर्वतांचल में कदलीदेश (स्त्रीदेश) की परिकल्पना और मत्स्येन्द्रनाथ तथा गोपीनाथ आदि और भी योगियों का पहुँचना–लौटना नाथपन्थ के इस रहस्य–दर्शन का एक उपखण्ड है। नाथपन्थ, औघड़पन्थ, अमरपन्थ, स्वामीपन्थ, कबीरपन्थ, अगमपन्थ, गोरखपन्थ आदि पान्थिक नाम हैं। इसी तरह रुद्रसम्प्रदाय, शैवसम्प्रदाय, शाक्तसम्प्रदाय, श्रीसम्प्रदाय, राधावल्लभीसम्प्रदाय, रामावतसम्प्रदाय और नाथसम्प्रदाय जैसे नाम मत या पन्थ के संवाहक बने। प्रत्येक पन्थ व सम्प्रदाय का कोई–न–कोई संस्थापक प्रतिनिधि अथवा संवाहक–द्रष्टा रहा है। सभी के अपने–अपने तत्त्वसिद्धान्त बने, जिसने पन्थ अथवा सम्प्रदाय अथवा मत का अभिनव शुभारम्भ किया।

'नाथपन्थ' के प्रस्थानिक बीज–बिन्दु हैं 'शिव'। शिव अर्थात् शिवनाथ। शिवनाथ अर्थात् आदिनाथ शिव। शिव के डमरू–निनाद से बाह्यनाद अर्थात् नादब्रह्म की उत्पत्ति हुई। यही नादब्रह्म का शब्दकायिक रूपान्तरण है–'नाथपन्थ'। 'नाथ' एक ब्रह्मवाची उपाधि है, एक पुरापुरुषवाची विशेषण है। दीक्षित योगियों अथवा अवधूतों के नाम के अन्त में जुड़कर एक पूर्ण नाथपन्थी–अभिधान अर्जित करता है, जैसे आदिनाथ, शिवनाथ, मत्स्येन्द्रनाथ, गोरखनाथ, अवेद्यनाथ, आदित्यनाथ आदि।"[1]

मुगल आक्रान्ताओं से त्रस्त होकर वज्रयानी सिद्धों ने अपने आश्रमस्थल नालन्दा एवं विक्रमशिला के ध्वस्त होने पर नेपाल की तराइयों में जाकर अपनी प्राण–रक्षा की। यहाँ उनका सम्पर्क शैव साधकों से हुआ। दोनों साधनाओं के मेल ने नाथपन्थ को जन्म दिया। वज्रयान की सहज–साधना नाथसम्प्रदाय के रूप में पल्लवित हुई। इस तरह नाथसम्प्रदाय सिद्धों का एक विकसित रूप है। नाथपन्थ को सिद्धों व सन्तों के बीच की कड़ी कहना चाहिए। 'नाथ' शब्द का अर्थ है 'स्वामी'। कुछ लोग मानते हैं कि 'नाग' शब्द ही अपभ्रंश में उतरकर 'नाथ' हो गया। भारत में नाथयोगियों की परम्परा बहुत प्राचीन रही है। नाथपन्थ हिन्दू समाज का एक अभिन्न अंग है। नौ नाथों से ही 84 सिद्ध हुए। नौ नाथों के सम्बन्ध में विद्वानों में मतभेद है।

**अनुरूपी लेखक / संयुक्त लेखक**

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- I, Issues-27, YEAR- Jan.-March-2023

नाथसम्प्रदाय भारत का एक धार्मिक हिन्दू–पन्थ है। मध्ययुग में प्रादुर्भूत इस सम्प्रदाय में बौद्ध, शैव तथा योग की परम्पराओं का समन्वय दिखायी देता है। यह हठयोग की साधना–पद्धति पर आधारित पन्थ है। षिव इस सम्प्रदाय के प्रथम गुरु एवं आराध्य हैं। इसके अतिरिक्त इस सम्प्रदाय में अनेक गुरु एवं शिष्य हुए। नाथों की संख्या नौ मानी गयी है। लेकिन अलग–अलग ग्रन्थों में इनके क्रम अलग–अलग दिये गये हैं। प्रचलित क्रम इस प्रकार है– आदिनाथ, मत्स्येन्द्रनाथ, जालन्धरनाथ, गोरक्षनाथ, नागार्जुन, सहस्रार्जुन, दत्तात्रेय, देवदत्त, जड़भरत। जनश्रुति है कि आदिनाथ साक्षात् शिव हैं। मत्स्येन्द्रनाथ और जालन्धरनाथ उनके शिष्य थे। लौकिक रूप में मत्स्येन्द्रनाथ इस पन्थ के आदि प्रवर्तक हैं। कहा जाता है कि सिंघलद्वीप की रूपसियों में आसक्त हो जाने से मत्स्येन्द्रनाथ साधनाच्युत होकर कुएँ में पड़े थे, तब 'जाग मछन्दर गोरख आया' कहकर गोरखनाथ ने उन्हें उद्‌बोधन दिया था। अतः इस पन्थ के वास्तविक प्रवर्तक गोरखनाथ ही माने जाते हैं। कहते हैं कि आदिनाथ के दो शिष्य थे – 1. मत्स्येन्द्रनाथ 2. जालन्धरनाथ। दोनों नाथों की अलग–अलग शिष्य–परम्पराएँ हैं। मत्स्येन्द्रनाथ–गोरखनाथ की पृथक् तथा जालन्धरनाथ–कृष्णपाद की पृथक् शिष्य–परम्परा है। नाथ–सम्प्रदाय के अनुयायी मुख्यतः बारह शाखाओं में विभक्त हैं। ये बारह पन्थ हैं–

1. सन्तनाथी 2. धर्मनाथी 3. रामपन्थ 4. नटेश्वरी 5. कपिलानी 6. वैराग 7. माननाथी 8. आईपन्थ 9. पागलपन्थ 10. धजपन्थ 11.कन्हण 12. गंगानाथी।

नाथपन्थ के चौरासी सिद्धों की सबसे प्राचीन सूची शेखराचार्य ज्योतिरीश्वर के मैथिल ग्रन्थ 'वर्णरत्नाकर' में है जो ऐशियाटिक लाइब्रेरी में सुरक्षित है। इसमें अनेक सिद्ध वज्रयानी सिद्धों से अभिन्न हैं। नाथपन्थियों की भाषा जनभाषा है जिसे पुरानी हिन्दी कहते हैं। इस प्रकार इस पर थोड़ा–बहुत अपभ्रंश का भी प्रभाव है। नाथों के काव्य का स्वरूप मूलतः सबदियों और पदों में है जिसमें नीति, आचार, संयम और योग सम्बन्धी विचार वर्णित हैं। सिद्धों की वाममार्गी भोगप्रधान योग–साधना की प्रतिक्रिया के रूप में आदिकाल में ही हठयोग साधना आरम्भ हुई। नाथपन्थ को सिद्धों की परम्परा का ही विकसित रूप मानना चाहिए। प्रसिद्ध हिन्दी–इतिहासकार डॉ. रामकुमार वर्मा ने नाथों के सम्बन्ध में कहा है कि – "नाथपन्थ के चरमोत्कर्ष का समय 12वीं सदी से 14वीं सदी के अन्त तक माना गया। नाथपन्थ से ही भक्तिकाल के सन्तमत का विकास हुआ था, जिसके प्रधान व प्रथम कवि कबीरदास थे।"[2]

प्रसिद्ध निबन्धकार, इतिहासकार एवं आलोचक आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी कहते हैं कि "शंकराचार्य के बाद इतना प्रभावशाली और इतना महिमान्वित भारतवर्ष में दूसरा नहीं हुआ। भारतवर्ष के कोने–कोने में उनके अनुयायी आज भी पाये जाते हैं। भक्ति–आन्दोलन के पूर्व सबसे शक्तिशाली धार्मिक आन्दोलन गोरखनाथ का भक्तिमार्ग ही था। गोरखनाथ अपने युग के सबसे बड़े नेता थे।"[3]

गुरु–शिष्य–परम्परा भारतीय संस्कृति की विशिष्टता है। प्राचीनकाल में ज्ञान–परम्परा मौखिक होने के कारण गुरु–शिष्य–परम्परा का अधिक महत्त्व था। भारत की सभी ज्ञान–परम्पराओं में गुरु–शिष्य–परम्परा प्रतिश्ठित हुई। नाथपन्थ में भी गुरु–शिष्य–परम्परा का अभ्युदय इसी स्वाभाविक प्रक्रिया का हिस्सा था, किन्तु योग प्रधान इस आध्यात्मिक पान्थिक–परम्परा में गुरु का महत्त्व बढ़ता गया। महायोगी मत्स्येन्द्रनाथ एवं गुरु श्री गोरखनाथ क्रियात्मक योग के प्रणेता हैं। नाथपन्थ के योगियों ने योग को व्यावहारिक धरातल प्रदान किया। योग को सीखने में सिद्धान्त से अधिक व्यावहारिक प्रशिक्षण प्रभावी है। अनुभवयुक्त सिद्धान्त पढ़कर अभ्यास में उतारना अत्यन्त कठिन है। नाथपन्थ सिद्ध–मत है, योग–मत है। नाथपन्थ में योगी शिष्य योगाभ्यास गुरु से सीखते हैं। महायोगी मत्स्येन्द्रनाथ एवं गुरु श्री गोरखनाथ से गुरु–शिष्य की अद्वितीय परम्परा अनवरत बनी हुई है। नाथपन्थ में महायोगी गोरखनाथ ने अपने गुरु मत्स्येन्द्रनाथ को कदलीवन के मायाजाल से मुक्त कराया था। गोरखनाथ का 'जाग मछन्दर गोरख आया' सन्देश आज भी पन्थ के गुरु एवं शिष्य–परम्परा का अद्वितीय उदाहरण है। नाथपन्थ की गुरु–शिष्य–परम्परा में आज भी यह देखा जाता है कि गुरु अपनी शिष्य–परम्परा को ध्यान से सुनता है, गुनता है और उसका सच सहर्ष स्वीकार करता है।

महायोगी गोरखनाथ द्वारा संरक्षित नाथपन्थ का विस्तार बहुत था। इस हिन्दू योगी के नाथपन्थ का द्वार (हिन्दू और मुसलमान) सभी के लिए खुला था। नाथपन्थ के योगी सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध अपना योग और सामाजिक समरसता का मन्त्र लेकर हर द्वार पर गए, चाहे वह द्वार किसी भी मजहब को मानने वाले का हो, किसी विचार–दर्शन को स्वीकार करने वाले का हो। गोरखनाथ ने हिन्दुओं के साथ–साथ इस्लामी समाज को भी रूढ़ियों–कुरीतियों के विरुद्ध तनकर खड़ा होने का उपदेश दिया। योग की जीवनधारा पर चलकर मुहम्मद साहब के उपदेशों को सही सन्दर्भों में समझने का सन्देश दिया। महायोगी गोरखनाथ के यही उपदेश एवं सन्देश आगे चलकर कबीर, जायसी और रहीम देते हुए दिखायी देते हैं।

गोरखनाथ ने हिन्दू–मुस्लिम एकता का एकाकार रूप योग एवं योगी में प्रस्तुत करते हुए कहा कि हिन्दू अपने भगवान को मन्दिर में खोजता है, जबकि मुसलमान मस्जिद में। परन्तु योगी के लिए यह परमपद सर्वत्र है। मन्दिर–मस्जिद सब जगह उसे

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- I, Issues-27, YEAR- Jan.-March-2023

परमात्मा का सहज बोध सुलभ होता है। राम और खुदा घर–घर में व्याप्त हैं–

**"हिन्दू ध्यावै देहुरा मुसलमान मसीत।**
**जोगी ध्यावै परम पद जहां देहुरा न मसीत।।**
**हिन्दू आर्श अलश कौं तहाँ राम अछै न शुदाई।।"**

हिन्दू–मुस्लिम एकता या यों कहें सभी को एक समान मार्ग पर चलने का उपदेश नाथपन्थ की पूरी योग–साधना में प्राप्त होता है। नाथपन्थ की योग–परम्परा में सगुण–निर्गुण सभी प्रकार की उपासना पद्धतियों का समवेत–स्वर है। यही समवेत–स्वर सूफी–परम्परा में प्रतिबिम्बित हुआ। भारत में सूफी मत नाथपन्थ की इसी हिन्दू–मुस्लिम एकता के विचार–दर्षन का प्रतिफलन है।

कुल मिलाकर देखा जाय तो सभी नौ नाथों में गोरखनाथ सबसे महत्त्वपूर्ण व्यक्तित्व के रूप में सामने आते हैं। गोरखनाथ जैसे सिद्ध महापुरुश के समय के विषय में सोचना और निर्णय करना कठिन कार्य है। गोरखनाथ नाथ–साहित्य के प्रथम कवि माने जाते हैं। वे सिद्ध मत्स्येन्द्रनाथ के शिष्य थे, किन्तु उन्होंने सिद्धों का विरोध किया। इनके कार्यकाल के सन्दर्भ में विद्वानों के विभिन्न मत हैं। राहुल सांकृत्यायन ने गोरखनाथ का समय विक्रम की दसवीं शताब्दी (800 से 900 ई. के बीच) माना है। प्रसिद्ध हिन्दी–इतिहासकार आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी ने उन्हें नवीं शती का माना है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल जी तेरहवीं शती निर्धारित करते हैं। डॉ. पीताम्बरदत्त बड़थ्वाल, डॉ. रामकुमार वर्मा के मत से सहमति प्रकट करते हुए ग्यारहवीं शती को मानते हैं। नये अनुमानों में यह माना जाने लगा कि गोरखनाथ ने लगभग 13वीं शती के प्रारम्भ में अपना साहित्य रचा था।

गोरखनाथ के जन्मस्थान के विषय में भी विद्वानों में पर्याप्त मतभेद है। कोई गोरखनाथ को गोदावरी नदी के किनारे चन्द्रगिरि में उत्पन्न मानता है तो कोई उनका जन्म नेपाल में मानता है। कुछ लोगों का मानना है कि वे झेलम नदी से गोरखपुर आये थे। दूसरा मत है कि गोरक्ष सहस्रस्तोत्र के आधार पर वे 'बड़व' में उत्पन्न हुए थे। इस सम्बन्ध में डॉ. रांगेयराघव उन्हें पेशावर के निकट वाले गोरखपुर में उत्पन्न मानते हैं। इन सभी मतों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि गोरक्षनाथ जी का जन्म पश्चिमोत्तर भारत में ही किसी स्थान पर हुआ था।

गोरखनाथ की जाति के सम्बन्ध में विद्वानों में मतभेद है, किन्तु डॉ. हजारीप्रसाद द्विवेदी, डॉ. रांगेयराघव आदि विद्वानों ने उन्हें ब्राह्मण कुल में उत्पन्न हुआ माना है। कई विद्वानों के अनुसार ब्राह्मण–दम्पती को मत्स्येन्द्रनाथ की कृपा से पुत्र की प्राप्ति हुई थी। बाद में गुरु मत्स्येन्द्रनाथ से शिक्षा ग्रहण कर उच्चकोटि के विद्वान् व योगी बन गये। गोरखनाथ ने अकाल संन्यास लिया था अर्थात् वे बाल्यावस्था में ही संन्यस्त हो गये थे। अकाल संन्यास लेने वाले बहुत से आचार्यों और संन्यासियों की चर्चा बहुत पुरानी है। गोरखनाथ का संन्यास नामादि का परिवर्तन मात्र नहीं है, जन्मान्तर है। गोरखनाथ का सम्बन्ध साधना–पद्धति और दर्शन से भी है। कुछ रोचक उदाहरण दिये जा सकते हैं। 'गोरक्षनाथस्तोत्र' में कहा गया है–'ग'कार गुण–संयुक्त, 'र'कार रूप–लक्षण, 'क्ष'कारेण अक्षय ब्रह्म श्रीगोरक्षनमोऽस्तुते।

'गोरख–उपनिषद्' में दो स्थलों पर भिन्न–भिन्न व्याख्याएँ मिलती हैं। प्रथम के अनुसार, गोरखनाथ अन्तर्यामी होकर संसार के जीवों की इन्द्रियों (गो) की रक्षा करते हैं। दूसरी व्याख्या के अनुसार, 'गो' शब्द का अर्थ वाक्–ब्रह्म है। 'र' का अर्थ है–'रक्षा करते हैं।' 'क्ष' का अर्थ है– 'क्षयरहित'। अर्थात् गोरक्षनाथ अक्षय वाक्–ब्रह्म की रक्षा करते हैं। एक आधुनिक साम्प्रदायिक रचना 'गोरक्ष–शब्दनिरुक्ति' में कहा गया है–

**"गां रक्षतीति गोरक्षः रक्षतीति रक्षः, गवां रक्षः गोरक्षः"**

यावत् गोपदवाच्य की जो रक्षा करता हो, उसे गोरक्ष कहते हैं, अर्थात् जितने भी 'गो' शब्द के अर्थ हैं, उन अर्थों की रक्षा करने वाले का नाम गोरक्ष है।"[4]

गोरखनाथ के चरित्र पर पौराणिक प्रभाव इतना पृथुल है कि उसके भीतर से तथ्य को निकालना असम्भव–सा हो गया है। शिवपुराण के अनुसार, गोरखनाथ शिवावतार थे। 'गोरक्षगीता' में बताया गया है कि इन्द्राणी के पातिव्रत की रक्षा में गोरखनाथ ने सुराचार्य बृहस्पति की सहायता की थी। मार्कण्डेयपुराण में मार्कण्डेय और मत्स्येन्द्रादि के द्विविध हठयोगी मतों की ओर संकेत है। स्कन्दपुराण के केदारखण्ड में नवनाथों में गोरखनाथ की गणना की गयी है।

गोरखनाथ के जीवनवृत्त से सम्बन्धित प्रामाणिक सामग्री के अभाव में उनके चरित्र और व्यक्तित्व पर भी प्रामाणिक रूप में कुछ कहना कठिन है। उनके नाम से प्राप्त केवल रचनाओं और किंवदन्तियों के आधार पर प्रामाणिक सामग्री का अभाव होने के कारण ही विद्वान् गोरखनाथ के चरित और व्यक्तित्व पर कुछ लिखने में संकोच करते हैं। फिर भी प्रयास कर एक रूपरेखा तैयार की जा सकती है। जब डॉ. हजारीप्रसाद द्विवेदी गोरखनाथ को शंकराचार्य के बाद दूसरा महिमाशाली व्यक्तित्व महापुरुष घोषित करते हैं, तो वे एक साथ गोरखनाथ के व्यक्तित्व के अनेक महत्त्वपूर्ण आयामों की ओर भी अनायास संकेत

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- I, Issues-27, YEAR- Jan.-March-2023

कर देते हैं। गोरखनाथ के व्यक्तित्व के महत्त्व को तत्कालीन धार्मिक, आध्यात्मिक और सामाजिक परिप्रेक्ष्य में आँकना चाहिए। गोरखनाथ के व्यक्तित्व–गुरुत्व और उनकी महानता को प्रकाशित करने में विभिन्न कालखण्ड और इतिहास भी कम योगदान नहीं करते। उनके जिस धार्मिक, साम्प्रदायिक और सामाजिक कर्तृत्व का पहले स्मरण किया गया है, उन सबके मूल में उनके दर्शन और साधन को ही समझना चाहिए, जिनका निर्वचन उन्होंने अपनी रचनाओं में किया है। उनके नाम से अमनस्कयोग, अमरौघशासनम्, अवधूतगीता, गोरक्षकल्प, गोरक्षकौमुदी, गोरक्षगीता, गोरक्षशतक, योगचिन्तामणि, योगबीज, योगशास्त्र आदि रचनाएँ संस्कृत में लिखी हुई बतायी जाती हैं। उक्त ग्रन्थों में से अनेक ग्रन्थ ऐसे हैं, जो एक ही ग्रन्थ के नामान्तर हैं।

ब्रिग्स ने गोरखनाथ के 'गोरक्षशतक' को उनकी सबसे प्रामाणिक रचना माना है। गोरखनाथ की सबसे प्रामाणिक रचना 'सिद्धसिद्धान्तपद्धति' को बताया जाता है। उपर्युक्त सारे ग्रन्थों की विषयसामग्री अपने सम्पादित रूप में तथा अपनी प्राचीनता में निर्विवाद हैं। गोरक्षशतक, सिद्धसिद्धान्तपद्धति, महार्थमंजरी नामक रचनाएँ अधिक प्रामाणिक प्रतीत होती हैं। 'सिद्धसिद्धान्तपद्धति' का महत्त्व दो दृष्टियों से है। इसमें एक ओर नाथमत की तत्त्ववैज्ञानिक दृष्टि का प्रकाश है तो दूसरी ओर इसके प्रतिपादन के प्रमाण में पिण्डब्रह्माण्डवाद की सिद्धि की गयी है, जिसके ज्ञान के बिना योगी होना असम्भव है। इस प्रकार यह ग्रन्थ मुख्य रूप से दार्शनिक ग्रन्थ होते हुए भी साधना की भूमिका के ज्ञान के लिए अनिवार्य है। इसके छह उपदेशों में क्रमशः पिण्डोत्पत्ति, पिण्डविचार, पिण्डसंवित्ति, पिण्डाधार, पिण्डपदसमरसीकरण और अवधूतयोगिलक्षण का निरूपण है। योगांगों का भी निरूपण कर दिया गया है। बाह्याचार और कुत्साचार का विरोध करते हुए अन्तस्साधना का समर्थन किया गया है। योगियों ने भण्डत्व का उद्घाटन कर 'आदेश', 'कुण्डल', 'कौपीन', 'खर्पर', 'भजन' आदि के सिद्धान्त की व्याख्या भी की है। 'अधिकार' पर गोरखनाथ ने विशेष बल दिया है।

गोरखनाथ की हिन्दी रचनाएँ भी कम महत्त्वपूर्ण नहीं हैं। 13वीं–14वीं शती की देशी भाषा के रूप में प्राप्त ये रचनाएँ विविधरूपात्मक हैं और उस काल में प्रचलित विविध रचना–शैलियों में लिखी हुई हैं। इनमें गोरखनाथ के विचार अवश्य हैं क्योंकि इनका स्वर विचार–भाव–साधना की दृष्टि से कहीं भी संस्कृत–रचनाओं से भिन्न नहीं है। डॉ. पीताम्बरदत्त बड़थ्वाल ने 'गोरखबानी' में इन रचनाओं का सम्पादन किया है। गोरखनाथ की संस्कृत और हिन्दी दोनों प्रकार की रचनाओं का यदि मूल्यांकन करें और गोरखनाथ के व्यक्तित्व से उनका समन्वय करें तो यह स्पष्ट भासित होता है कि ये उपदेश केवल योगियों के लिए ही नहीं, सामान्य जनसमाज के लिए भी समान रूप से उपयोगी, प्रासंगिक और महत्त्वपूर्ण थे। साधना, धर्म, सामाजिक जीवन, उदारता, दया आदि गुणों की महिमा उनमें चरमोत्कर्ष को प्राप्त थी। इसीलिए वे आज भी भारतवर्ष के सर्वाधिक पठित और अनपढ़ दोनों के लिए स्मरणीय बने हुए हैं।

सारांशतः यह कहने में आज किसी भी इतिहासकार, साहित्यकार और खोजकर्ता को किसी तरह का संशय नहीं है कि नाथपन्थ और उसके प्रधान प्रवर्तक गुरु गोरखनाथ का चिन्तन और अवदान विश्वमुखी बन चुका है। नाथसम्प्रदाय और उसके योग–दर्शन पर अनेकानेक शोधकार्य हो रहे हैं। नाथ–साहित्य और योग–दर्शन के विद्वान् अनुसन्धायक बेबाक निष्कर्ष दे रहे हैं कि– "गोरख की उपदेश–वाणी का विश्व–प्रसार अब हो रहा है। नाथपन्थ और उसके योग–दर्शन पर विस्तृत और गम्भीर शोधकार्य अब हो रहे हैं। गोरक्ष–दर्शन पर भी हुए चिन्तन–मनन साहित्य के आकार में कम प्रसारित हुए। लेखक–दार्शनिक और इतिहासकार अन्तर्द्रष्टा होकर भी बहिर्वक्ता नहीं बन सके। नाथपन्थ का शब्दकोश पूर्णाकार में सामने नहीं आया। आज विश्वकोश–निर्माण की आकाँक्षा जगी है, तो निश्चयतः योगी आदित्यनाथ के भाषा–साहित्य–प्रेम के कारण, योग–दर्शन को समझने और उसे विश्व–चिन्तन का विषय बनाने के कारण। वर्तमान बतला रहा है कि नाथ–चिन्तन और योग–दर्शन के नये महानायक योगी आदित्यनाथ गुरु गोरखनाथ की आर्षवाणी का लोकव्यापी सम्प्रसार करेंगे। गोरख का विचार–सिन्धु असंख्य ज्ञान–तरंगों में परिव्याप्त है। जरूरत है कि आज की भटकी–दर्पभरी मानवता को गोरख–पथ पर खड़ा किया जाय। गोरख की एक–एक वाणी अनमोल है। प्रसंगवश, उनकी काव्यवाणी का एक उपदेशक पद–बन्ध अमल में लाने–योग्य है–

**हबकि न बोलिबा, ठबकि न चालिबा, धीरै धरिबा पावं।**
**गरब न करिबा, सहजै रहिबा, भणत गोरश रावं।।**

अर्थ आसान है, मगर मीमांसा बड़ी गूढ़ है। प्रत्येक उपदेश–खण्ड बहुत दूर तक अर्थ की बौछार करता है। साधारण काव्यभाषा में गुरु गोरखनाथ असाधारण बात रखते हुए कह जाते हैं कि तौलकर बोलना चाहिए, बिना सोचे–विचारे नहीं। पैर को पटक कर नहीं, धीरे से धरती पर रखकर चलना चाहिए। पैर पटकने से धरती माँ चोटिल हो उठेगी, अभीप्सित अभिशप्त हो उठेगा। गर्व (आत्मदम्भ) कभी नहीं करना चाहिए, क्योंकि अहंकार आत्म–नाश को निमन्त्रण देता है। गोरख की साधु–साधना निष्कर्ष देती है कि तनावरहित हो सहज स्वभाव रखना चाहिए। सहजता लोक को आकृष्ट करती है। लोक आकृष्ट होगा तभी तुम्हारी उपदेशना विश्वमुखी होगी।"[5]

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- I, Issues-27, YEAR- Jan.-March-2023

प्रकृति और छायावादी काव्य–दर्शन के निगूढ़ मीमांसक कवि सुमित्रानन्दन पन्त के एक जिज्ञासा–प्रश्न का प्रत्युत्तर देते हुए दर्शन–मनीषी ओशो ने भारत के धर्माधारित आध्यात्मिक आकाश की बारह विभूतियों (कृष्ण –पतंजलि –बुद्ध –महावीर –नागार्जुन –शंकर–गोरख – कबीर – नानक – मीरा – रामकृष्ण – कृष्णमूर्ति) में गुरु गोरखनाथ को पांक्तेय अध्यात्म–योगी और महादार्शनिक अवधूत के रूप में अभिलक्षित किया है। महर्षि ओशो की निष्कर्ष–विधायिका टिप्पणी नाथपन्थी महायोगी गुरु गोरखनाथ के शिखरस्पर्शी साधनासिद्धि का साक्षात्कार पाने के लिए पर्याप्त है।

## संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. राय, प्रो. रामदरश, सम्भवामि युगे युगे, नाथपन्थ और नवनाथ, पृष्ठ 75. अभिधा प्रकाशन, मुजफरपुर, 2020, ISBN रू 978.81.947866.2.7.
2. राय, डॉ. कुसुम, हिन्दी साहित्य का वस्तुनिष्ठ इतिहास, पृष्ठ 40 विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, ISBN–978–81–7/254–624–3.
3. आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी, नाथसम्प्रदाय, पृष्ठ 210–11.
4. उपाध्याय, नागेन्द्रनाथ, गोरखनाथ, पृष्ठ 29. साहित्य अकादमी, फीरोजशाह मार्ग, नई दिल्ली। ISBN–978–81–260–2042–3.
5.. राय, प्रो. रामदरश, सम्भवामि युगे युगे, गोरक्ष और आदित्यनाथ, पृष्ठ 118–119. अभिधा प्रकाशन, मुजफरपुर, 2020, ISBN रू 978.81.947866.2.7.

*****